

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

20-जून-2017 22:30 IST

लखनऊ में अब्दुल कलाम प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन और अन्य विकास परियोजनाओं के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

नौजवान साथियों,

आज एक साथ कई प्रकल्पों के लिए इस कार्यक्रम में मुझे सम्मिलित होने का अवसर मिला है। उत्तर प्रदेश में सरकार के द्वारा जिस उमंग और उत्साह के साथ, स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ विकास की यात्रा चल रही है; देश के हर कोने में उत्तर प्रदेश की पल-पल की घटनाओं की तरफ लोगों का ध्यान है, बड़ी उत्सुकता है। और योगी जी के नेतृत्व में एक के बाद एक जो कदम उठाए जा रहे हैं, परिश्रम की पराकाष्ठा करते हुए, कई वर्षों की जो बीमारियां हैं, लम्बे अर्से के जो अवरोध हैं; उसे दूर करते हुए उत्तर प्रदेश को तेजी से आगे बढ़ाने के उनके प्रयास, योगी जी को उनकी टीम को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ; उनका बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ।

आज मुझे कुछ समय Drug Research Institute में बिताने का अवसर मिला। हमारे वैज्ञानिक मानवता के लिए ऐसे Drugs जो सस्ते भी हों, कारगर भी हों और side-effect के बिना त्वरित उपचार करने वाले हों, उसके संशोधन में अपनी पूरी जिंदगी laboratory में खपा रहे हैं। वैज्ञानिक एक प्रकार से आधुनिक ऋषि होते हैं और आधुनिक ऋषि की तरह वो अपने लक्ष्य को समर्पित हो करके मानव को किस प्रकार से मुसीबतों से मुक्त किया जाए, शारीरिक पीड़ा से मुक्त किया जाए, परम्परागत ज्ञान-विज्ञान को आधुनिक साधनों के माध्यम से, आधुनिक व्यवस्थाओं के माध्यम से और अधिक सटीक कैसे बनाया जाये; उस पर वो काम कर रहे हैं।

आज मानव के सामने, खास करके आरोग्य के क्षेत्र में अनेक चुनौतियां हैं। एक दवाई बनाने में सालों बीत जाते हैं, सैंकड़ों वैज्ञानिक खप जाते हैं, लेकिन उसके पहले नए प्रकार की बीमारी जन्म ले लेती है। एक प्रकार से स्पर्धा चलती है। लेकिन विज्ञान की मदद से, innovation के सहारे हमने इस दोषों को परास्त करना है, बीमारियों को परास्त करना है और गरीब से गरीब व्यक्ति को सस्ते से सस्ती और कारगर दवाई कैसे उपलब्ध हो, इस चुनौतियों को हमने स्वीकार करके विजयी होना है।

आज मुझे इस Technical University के भवन के लोकार्पण का भी अवसर मिला है। डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम के साथ इसका नाम जुड़ा हुआ है। मैं नहीं मानता हूँ कि तकनीकी जगत के लिए डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम से बड़ा कोई प्रेरणा का नाम हो सकता है। Science is Universal but Technology Must Be Local. और यहीं पर हमारी कसौटी है। विज्ञान के सिद्धान्त प्रतिपादित हो चुके हैं। विज्ञान का ज्ञान उपलब्ध है, लेकिन हमारी युवा पीढ़ी से उन चीजों की अपेक्षा है कि उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से जब Technology मानव जीवन को बड़ी प्रभावित कर रही है, तब हम Technology में वो कौन से संशोधन करें, कौन से आविष्कार करें, जो हमारे सामान्य मानवी की Quality of Life में बदलाव लाएं। हम दुनिया में गर्व कर रहे हैं कि भारत, जिसके पास Eight Hundred Million नौजवानों की फौज है, 35 से कम उम्र के नौजवानों का ये देश है, उसके पास दिमाग भी है। अगर हाथ में हुनर हो, विज्ञान अधिष्ठान हो, और Technology का आविष्कार हो तो मेरा देश का नौजवान विश्व में अपना डंका बजाने का सामर्थ्य रखता है। लेकिन हम उस Technology के सहारे उतनी प्रगति नहीं कर सकते। जो पिछली शताब्दियों में बहुत बड़ा रोल कर गई होगी, लेकिन आने वाली शताब्दी में शायद वो उपकारक न भी हो। और इसलिए Technology को समय से आगे चलना पड़ता है, उसे

दूर का देखना पड़ता है। और भारत के नौजवानों में वो सामर्थ्य है, उस सामर्थ्य को ले करके हम Technology के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को कैसे पार करें।

आज भी हमारा देश Defense के लिए, सुरक्षा के लिए, हमारी फौज के लिए हर छोटी-मोटी चीज विदेशों से हम लाते हैं। क्या हम बहुत जल्द Defense के Sector में भारत को आत्मनिर्भर नहीं बना सकते हैं? क्या देश की सुरक्षा के लिए जिन संसाधनों की आवश्यकता है, जिस Technology की आवश्यकता है, जिस equipment की आवश्यकता है, उसे भारत में ही नए-नए आविष्कार के साथ हम क्यों न करें। सुरक्षा के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर कैसे बने, इस सपनों को ले करके हम आगे बढ़ रहे हैं। और इसलिए हमने कई नीतिगत परिवर्तन किए हैं। Defense Sector में 100 Percent Foreign Direct Investment को हमने Open किया। हमने भारत के कारोबारियों को Partnership के लिए Open Up किया है। हमने भारत सरकार जो चीजें बाहर से लेती है, अगर हिन्दुस्तान में बनी हुई लेगी तो उसको विशेष प्रोत्साहन की सूची तैयार की है। और ये सारे अवसर Technology से जुड़ी हुई युवा पीढ़ी के लिए हैं।

वैसा ही एक दूसरा क्षेत्र है। आज Medical Science एक प्रकार से Technology Driven है। अब डॉक्टर तय नहीं करता है कि आपको कौन सी बीमारी है, मशीन तय करता है कि आप किस बीमारी से ग्रस्त हैं। आपके शरीर में कहां तकलीफ है, कहां कमी है, कैसी तकलीफ है; वो मशीन तय करता है। और बाद में डॉक्टर उस मशीन की रिपोर्ट के आधार पर आपके लिए आरोग्य का रीडमैप क्या होगा, दवाइयां कौन सी होंगी, ऑपरेशन करना है या नहीं करना है; उसके फैसले करता है। लेकिन ये Medical Equipment, उसका Manufacturing, भारत इतना बड़ा देश है, उसको इतनी बड़ी Requirement है। हमारी Technology Field के Students क्यों न सोचें कि हम वो Start Up शुरू करेंगे, हम उस विषय पर खोज करेंगे, हम भारत के अंदर ही आरोग्य के क्षेत्र में जिस Equipment की Requirement है उस Requirement को पूरा करने के लिए नई खोज के साथ नए निर्माण की दिशा में जाएंगे।

'Make in India' ये पूरा Concept हिन्दुस्तान के Technology से जुड़े हुए हमारे नौजवानों को एक नया अवसर देने के लिए, Start Up India, Stand Up India, Skill India, मुद्रा योजना, चाहे Finance की व्यवस्था करनी हो, चाहे Technological Support की व्यवस्था हो, चाहे Human Resource Development में Skill को प्रधान्य देना हो, चाहे Technical Knowledge में नई ऊंचाइयों को पार करना हो, एक प्रकार से Comprehensive Approach के साथ देश को, देश के पास जो Technical ज्ञान है, जो Technical महारत है, जो हमारी University के पास होगी, हमारी नौजवान पीढ़ी के पास होगी; इन सबको संतुलित करते हुए, संकलित करते हुए, देश को एक नई ऊंचाइयों पर ले जाना है। और इस देश ने दिखाया है, जब भी हिन्दुस्तान के युवा लोगों को अवसर मिला है, उन्होंने चुनौतियों को पार भी किया है और नए सीमांकन भी प्रस्थापित किए हैं।

Mars पर जाने के लिए दुनिया के बड़े-बड़े देशों ने प्रयास किया। पहले Trial में दुनिया का कोई देश Mars और Orbit में नहीं जा सका था। हिन्दुस्तान दुनिया का पहला देश था जो पहले Trial में Mars और Orbit में पहुंचा था। और दुनिया को तब अचरज हो गया कि भारत के युवा वैज्ञानिकों ने ये Mars की यात्रा इतनी सस्ते में की। लखनऊ में अगर आपको टैक्सी में जाना है, ऑटो रिक्शा में जाना है तो एक किलोमीटर का 10 रुपया तो लगता ही होगा। हम Mars पर पहुंचे, एक किलोमीटर का सिर्फ सात रुपये का खर्चा किया। और हमारा Mars पर जाने का जो Total Budget था वो Hollywood की फिल्म का जो खर्चा होता है उससे कम खर्चे में हमारे देश के वैज्ञानिक Mars पर पहुंच चुके।

ये सामर्थ्य है हमारी युवा पीढ़ी में, ये सामर्थ्य है हमारे देश के talented नौजवानों में, technicians में, वैज्ञानिकों में, पिछले दिनों जब भारत ने एक साथ 104 सेटेलाइट छोड़े दुनिया के लिए आश्चर्य था कि एक साथ 104 सेटेलाइट छोड़ने की ताकत इस देश के वैज्ञानिकों में है। इस सामर्थ्य को लेकर के आगे बढ़ना है और उस अर्थ में आज ये Technical University और उसके साथ जुड़े हुए सारे संबद्ध colleges उसको कैसे आगे बढ़ाएं? मैं जानता हूं उत्तर प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में काम करना कितना कठिन है। हमारे गर्वनर श्रीमान राम नाइक जी चांसलर के रूप में University में discipline कैसे आए, University में समय सीमा में काम कैसे हो, इस पर देर रात काम कर रहे थे। उत्तर प्रदेश के 28

Universities में से 24 Universities को अब वो समय पर exam हो, समय पर convocation हो, इसको कराने में सफल हुए हैं। ये discipline बहुत आवश्यक होती है। लेकिन राम नाइक जी बहुत ही focus काम करने के आदी हैं जिस चीज को हाथ में लेते हैं उसको पूरा करके रहते हैं और इसलिए उत्तर प्रदेश की Universities में rules and regulations, नियम परम्पराएं, discipline विद्यार्थियों के समय की बर्बादी न हो उस पर बड़ी बारीकी से नजर रखते हुए उसको आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अब योगी जी की सरकार आ गई है तो उनको और सुविधा हो गई है। काम को और सरलता से बढ़ा रहे हैं।

आज मेरे लिए खुशी की बात है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए कुछ परिवारों को उस आवास के निमित्त उनकी परवानगी के संबंध में एक प्रमाणपत्र दिया गया है। 2022 में भारत आजादी के 75 साल मनाएगा। आजादी के दीवानों ने सपने देखे थे, तब वो फांसी के तख्त पर चढ़े थे। जवानी जेलों में खपा दी थी। एक सुखी समृद्ध हिन्दुस्तान देखना चाहते थे। आजाद हिन्दुस्तान देखना चाहते थे। उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया था। 2022 में आजादी के 75 साल होंगे। क्या सवा सौ करोड़ देशवासियों की जिम्मेवारी नहीं है कि देश के दीवानों के सपनों को पूरा करने के लिए हम हिन्दुस्तान को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं। क्या सवा सौ करोड़ देशवासी मिलकर के इस देश को आगे नहीं ले जा सकते हैं? मेरा आत्मविश्वास है कि सवा सौ करोड़ देशवासियों में वो सामर्थ्य है कि हिन्दुस्तान को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं। हमने सपना संजोया है कि 2022 जब आजादी के 75 साल हों, हिन्दुस्तान के गरीब से गरीब के पास उसका अपना रहने के लिए घर हो, उसको अपनी छत हो और घर भी वो हो जिसमें शौचालय हो, बिजली हो, पानी हो, नजदीक में बच्चों को पढ़ने के लिए शिक्षा की व्यवस्था हो और उस सपने को पूरा करने के लिए पूरे देश में एक अभियान चलाएं ग्रामीण आवास का, शहरी आवास का और उसी के तहत कुछ माताओं को आज आवास मिले उनको घर मिले उसके लिए एक सम्मति पत्र सरकार की तरफ से दिया गया और एक मां कह रही थी। अब अच्छा हुआ बोले मेरा मकान बन जाएगा, बच्चों की शादी कराऊंगी और आपको शादी में बुलाऊंगी। उनका इतना उत्साह था। सपने जब सच होने लगते हैं तब इंसान किसी भी अवस्था में क्यों न हो कुछ कर गुजरने का माजा पैदा होता है वो मैंने उस मां की बातों से देखा है। शब्द उनके थे लेकिन वो भाव बड़ी प्रेरणा देती थी।

आज बिजली ऊर्जा ये विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है technology जीवन की life में ऊर्जा का अपना एक सामर्थ्य है। renewable energy के द्वारा solar energy के द्वारा देश में एक नई क्रांति लाने का प्रयास चल रहा है। LED bulb घर-घर पहुंचाकर के बिजली बचाने का एक बहुत बड़ा अभियान चल रहा है। करीब 22 करोड़ से भी ज्यादा LED के bulb पिछले एक साल के भीतर-भीतर घरों में लग चुके हैं और उसके कारण बिजली उससे भी ज्यादा मिलती है लेकिन खर्चा LED bulb के कारण, जिन परिवारों में LED bulb का उपयोग हो रहा है उससे जो बिजली के बिल की बचत हो रही है, वो करीब करीब 12 से 13 हजार करोड़ रुपये की बचत है। ये सामान्य मानवीय के पैसे बच रहे हैं। आज 400 KV का transmission line का यहां में लोकार्पण कर रहा हूं। ये जो मध्य भाग है कानपुर तक का पूरा उन्नाव समेत सारा, वहां पर एक quality बिजली, जो यहां के औद्योगिक जीवन को मदद करेगी, जो यहां के घर में जो बिजली चाहिए वो मदद मिलेगी। और आपके यहां तो बिजली वितरण में भी VIP कोटा रहता था मैंने सुना है। कुछ district बड़े VIP रहते थे वहां बिजली का एक प्रकार रहता था और कुछ district ऐसे थे ये... मैं योगी जी की बधाई करता हूं, अभिनंदन करता हूं उनका कि उन्होंने सभी 75 जिलों को एक समान रूप से बिजली के कारोबार का मदद करने का निर्णय किया। शासन का यही काम होता है। कुछ को विशेष लाभ और कुछ को कुछ नहीं। इसको खत्म करने में कितनी दिक्कत आती है, मैं जानता हूं लेकिन मुझे विश्वास है योगी जी ये करके रहेंगे, उन्होंने ये तय किया है परिणाम लाकर रहेंगे।

भाइयों बहनों, विकास की नई ऊंचाइयों को पार करने का देश प्रयास कर रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में विकास की नई ऊंचाइयों को पार करना है। सवा सौ करोड़ देश, इन सवा सौ करोड़ देशवासियों का ताकत आज पूरा विश्व ये मानता है कि दुनिया की बड़ी economy में सबसे तेज गति से आगे बढ़ना वाला कोई देश है तो उस देश का नाम हिन्दुस्तान है। पूरा विश्व आज भारत को गौरव की तरफ देख रहा है। अब हम सब सवा सौ करोड़ देशवासी मिलकर के तय करें, हम उत्तर प्रदेश के नागरिक मिलकर के तय करें, आप देखिए बदलाव कैसा आता है।

1 जुलाई से जीएसटी का प्रारंभ हो रहा है। इस देश के लिए बड़े गर्व की बात है। इस देश के सभी राजनीतिक दल, इस देश के सभी राजनीतिक नेता, कितना ही विरोध क्यों न हो। इस देश की सभी राज्य सरकारें, केंद्र सरकार मिलकर के एक ऐसा

ऐतिहासिक काम करने जा रहे हैं जो 1 जुलाई से देश की अर्थव्यवस्था में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आने वाला है। ये अपने आपमें बहुत बड़ी सिद्धी है। भारत के Federal Structure की सिद्धी है। भारत के राजनीतिक दलों की maturity की सिद्धी है। दल से ऊपर देश, ये हिन्दुस्तान के सभी राजनीतिक दलों ने दिखा दिया है। मैं सभी राजनीतिक दलों का आभारी हूँ, मैं सभी राज्य सरकारों का आभारी हूँ, मैं सभी विधानसभाओं का आभारी हूँ, लोकसभा का, राज्यसभा का आभारी हूँ। सबने मिलकर के इस जीएसटी लागू करने के लिए प्रयास सफलतापूर्वक किया। अब मुझे विश्वास है कि 1 जुलाई के बाद नागरिकों के सहयोग से, खासकर के छोटे-मोटे व्यापारियों के सहयोग से, हम सफलतापूर्वक जीएसटी में आगे बढ़ेंगे तब दुनिया के लिए बहुत बड़ा अजूबा होगा कि इतना बड़ा देश इस प्रकार से transformation कर सकता है। भारत के लोकतंत्र की ताकत की पहचान होगी दुनिया को कि इस देश के सभी दल, सभी भिन्न-भिन्न विचारधारा वाले दल देश हित में कंधे से कंधा मिलाकर के कितना बड़ा फैसला करते हैं, ये दुनिया के सामने एक अजूबा की तरह दिखने वाला है। ये भारत के लोकतंत्र की ताकत है, भारत के लोकतंत्र की maturity की ताकत है। भारत के लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की leadership की maturity की ताकत है कि संभव हुआ है। और इसलिए इसकी credit न मोदी को जाती है न एक सरकार को जाती है। ये सवा सौ करोड़ देशवासियों को जाती है। भारत के mature लोकतंत्र को जाता है। देश के सभी राजनीतिक दलों को जाता है, देश की सभी विधानसभाओं को जाता है, लोकसभा और राज्यसभा को जाता है।

अब इतना बड़ा काम हुआ है। हम उसे समझे, कठिनाईयां हैं तो सरकार ने सारी व्यवस्था की है। इन कठिनाइयों को दूर करने के पूरे प्रयास जारी रहेंगे, लेकिन एक सफल यात्रा और अधिक अच्छी तरह सफल हो उसके लिए 1 जुलाई से सभी देश के विशेषकर के व्यापारी कौम, ये उसको अपने कंधे पर उठाएं, दो कदम आगे चलें और सरलता पूर्वक उसको पार करने में देश का नेतृत्व ये हमारे व्यापारी आलम करें और करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

इसी एक अपेक्षा के साथ, मैं आप सबको इस कैंपस में पढ़ने वाले, इस कैंपस से जुड़े हुए सभी नौजवानों को हृदय से बहुत शुभकामनाएं देता हूँ, सफलता के लिए बहुत-बहुत अभ्यर्थना करता हूँ।

धन्यवाद

VBA/AK/NS/MAMTA

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-जून-2017 21:35 IST

पीएन पनिकर रीडिंग डे- रीडिंग मंथ सेलिब्रेशन के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री का संबोधन

रीडिंग मंथ सेलिब्रेशन के उद्घाटन अवसर पर यहां आने से मुझे काफी प्रसन्नता हो रही है। मैं इसे आयोजित करने के लिए पी. एन. पनिकर फाउंडेशन को धन्यवाद और बधाई देता हूं। पढ़ने से बढ़कर कोई आनंद नहीं हो सकता और ज्ञान से बड़ी कोई ताकत नहीं हो सकती है।

मित्रों,

केरल साक्षरता के क्षेत्र में एक मशाल वाहक और पूरे देश के लिए एक प्रेरणा रहा है।

पहला 100 प्रतिशत साक्षर शहर और पहला 100 प्रतिशत साक्षर जिला केरल से ही हैं। केरल 100 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा हासिल करने वाला पहला राज्य भी था। देश के कुछ सबसे पुराने कॉलेज, स्कूल और पुस्तकालय भी केरल में ही हैं।

यह अकेले सरकार द्वारा हासिल नहीं किया जा सकता था। इस उल्लेखनीय उपलब्धि को हासिल करने में नागरिकों और सामाजिक संगठनों ने काफी सक्रिय भूमिका निभाई है। केरल ने इस संबंध में लोगों की भागीदारी का एक मिसाल कायम किया है। मैं स्वर्गीय श्री पी. एन. पनिकर जैसे लोगों और उनके फाउंडेशन के कार्य की सराहना करता हूं। श्री पी. एन. पनिकर केरल में पुस्तकालय नेटवर्क के पीछे भी एक प्रेरणास्रोत रहे हैं। उन्होंने यह केरल ग्रंथशाला संगम के जरिये किया जिसकी स्थापना उन्होंने 1945 में 47 ग्रामीण पुस्तकालयों के साथ की थी।

मेरा मानना है कि पठन और ज्ञान का दायरा केवल काम संबंधी पहलुओं तक सीमित नहीं होना चाहिए। बल्कि इसे लोगों में सामाजिक दायित्व, राष्ट्र सेवा और मानवता की सेवा जैसी आदतों को विकसित करने में मदद करनी चाहिए। इसे समाज और राष्ट्र में बुराइयों को ठीक करना चाहिए। इसे राष्ट्र की एकता और अखंडता का सम्मान करते हुए शांति के विचारों को फैलाना चाहिए।

ऐसा कहा जाता है कि एक साक्षर महिला दो परिवारों को शिक्षित कर सकती है। केरल ने इस संबंध में अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है।

मुझे पता है कि पीएन पनिकर फाउंडेशन कई सरकारी एजेंसियों, निजी क्षेत्र की संस्थाओं और नागरिक सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर पठन के लिए पहल का नेतृत्व कर रहा है।

उनका लक्ष्य 2022 तक 300 मिलियन वंचित लोगों तक पहुंचना है। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य विकास एवं समृद्धि के साधन के रूप में पठन को बढ़ावा देना है।

पठन करने से लोगों को अपनी सोच का दायरा बढ़ाने में मदद मिलती है। खूब पढ़ने वाली आबादी भारत को वैश्विक स्तर पर उत्कृष्टता हासिल करने में मदद करेगी।

जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था तो इसी भावना के साथ मैंने 'वंचे गुजरात' नाम से इसी तरह का आंदोलन शुरू किया था। इसका अर्थ है 'गुजरात पढ़ता है'। मैंने लोगों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए एक सार्वजनिक पुस्तकालय का दौरा किया था। वह आंदोलन मुख्य तौर पर युवा पीढ़ी पर लक्षित था। मैंने नागरिकों से भी अनुरोध किया कि वे अपने गांव में 'ग्रंथ मंदिर' यानी किताबों का मंदिर बनाने के बारे में सोचें। इसे 50 या 100 किताबों के साथ भी शुरू किया जा सकता है।

मैंने लोगों से अपील किया कि वे एक-दूसरे को शुभकामनाओं के तौर पर गुलदस्ता देने के बजाय किताब दें। इस प्रकार की पहल से काफी बदलाव आ सकता है।

मित्रों,

उपनिषद् काल से ही ज्ञानवान लोगों का सदियों से सम्मान किया जाता रहा है। अब हम सूचना युग में पहुंच चुके हैं। लेकिन ज्ञान आज भी हमारा सबसे अच्छा मार्गदर्शक है।

मुझे बताया गया है कि डिजिटल लाइब्रेरी की पायलट परियोजना के तौर पर पनिकर फाउंडेशन इंडियन पब्लिक लाइब्रेरी मूवमेंट, नई दिल्ली के साथ मिलकर राज्य में 18 सार्वजनिक पुस्तकालयों के साथ काम कर रहा है।

मैं पूरे देश में इस तरह पढ़ने और पुस्तकालय का आंदोलन देखना चाहता हूं। यह आंदोलन केवल लोगों को साक्षर करने तक सीमित नहीं होना चाहिए। बल्कि इसे सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव लाने के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए। अच्छे ज्ञान की नींव पर ही बेहतर समाज का एक व्यापक ढांचा तैयार किया जाना चाहिए।

मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि राज्य सरकार ने 19 जून को पठन दिवस के तौर पर घोषित किया है। जाहिर तौर पर इसे लोकप्रिय बनाने के लिए काफी प्रयास करने पड़ेंगे।

भारत सरकार ने भी इस फाउंडेशन की गतिविधियों को सहायता प्रदान की है। मुझे बताया गया है कि पिछले दो वर्षों के दौरान इस फाउंडेशन को 1.20 करोड़ रुपये दिए गए हैं।

मुझे यह देखकर भी खुशी हो रही है कि यह फाउंडेशन अब डिजिटल साक्षरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है। यह समय की आवश्यकता है।

मित्रों,

मुझे लोगों की ताकत में भरोसा है। उसमें एक बेहतर समाज और राष्ट्र बनाने की क्षमता मौजूद है।

मैं यहां मौजूद हरेक युवा से पढ़ने की प्रतिज्ञा करने का आग्रह करता हूं। और ऐसा करने के लिए सभी को समर्थ बनाएं।

साथ मिलकर हम भारत को एक बार फिर ज्ञान और बुद्धि की भूमि बना सकते हैं।

धन्यवाद!

AKT/SH/SKC

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

14-अक्टूबर-2017 17:37 IST

पटना विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

विशाल संख्या में उपस्थित सभी नौजवान साथियो,

अभी हमारे मुख्यमंत्री जी बता रहे थे मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूँ जो पटना युनिवर्सिटी को कार्यक्रम में शरीक हो रहा है। मैं इसे सौभाग्य मानता हूँ और मैंने देखा है कि पहले जितने प्रधानमंत्री हुए वो कई अच्छे काम मेरे लिए बाकी छोड़कर गए हैं। और वैसा ही अच्छा काम करने का मुझे आज सौभाग्य मिला है।

मैं सबसे पहले इस पवित्र धरती को नमन करता हूँ, क्योंकि आज हमारा देश जहां भी है, उसे यहां तक पहुंचाने मैं इस University Campus का बड़ा योगदान है। चीन में एक कहावत है कि अगर आप सालभर का सोचते हैं, तो अनाज बोईए, अगर आप 10-20 साल का सोचते हैं तो फलों का वृक्ष बोईए, लेकिन अगर आप पीढ़ियों का सोचते हैं तो आप मनुष्य को बोईए। यह पटना युनिवर्सिटी उस बात का जीता-जागता सबूत है कि 100 साल पहले जो बीज बोया गया, 100 साल के भीतर अनेक पीढ़ियां यहां आकर, मां सरस्वती की साधना करके आगे निकल गईं, लेकिन वो साथ-साथ देश को भी आगे ले गईं। यहां पर कुछ राजनेताओं का जिक्र हुआ जो इसी University से निकलकर के किस प्रकार से भिन्न भिन्न स्थानों पर उन्होंने सेवाएं की हैं, लेकिन मैं आज अनुभव से कह सकता हूँ कि आज हिंदुस्तान का शायद ही कोई राज्य ऐसा होगा जहां सिविल सर्विस का नेतृत्व करने वाले पहले 5 लोगों में बिहार की पटना युनिवर्सिटी का विद्यार्थी न हो, यह हो नहीं सकता है।

एक दिन मे मैं भारत में राज्यों से आए हुए हर छोटे-मोटे अधिकारियों के साथ मे विचार-विमर्श कर रहा हूँ। Daily 80-90-100 लोगों से बात करने के लिए मैं बैठता हूँ, डेढ़-दो घंटे मैं बातचीत करता हूँ और मैं अनुभव करता हूँ कि उसमें सबसे बड़ा bulk बिहार का होता है। उन्होंने सरस्वती की उपासना मैं अपने आप को खपा दिया है। लेकिन अब वक्त बदल चुका है, अब हमें सरस्वती और लक्ष्मी दोनों को साथ-साथ चलाना है। बिहार के पास सरस्वती की कृपा है, बिहार के पास लक्ष्मी की कृपा भी बन सकती है और इसलिए ये भारत सरकार की सोच ये सरस्वती और लक्ष्मी का मिलन करते हुए बिहार को नई उचाईयों पर ले जाना है।

नीतिश जी का जो Commitment है, बिहार के विकास के प्रति उनकी जो प्रतिबद्धता है और भारत सरकार पूर्वी भारत के विकास के प्रति संकल्पबद्ध है, ये दोनों अवधारणाएं 2022 जब देश आज़दी के 75 साल मनाए, तो मेरा बिहार राज्य भी हिंदुस्तान के समृद्ध राज्यों की बराबरी में आकर खड़ा रहे, वो संकल्प लेकर आगे बढ़ना है।

हमारी ये पटना नगरी गंगा जी के तट पर है और जितनी पुरानी गंगा धारा है बिहार उतनी ही पुरानी ज्ञान धारा का, विरासत का मालिक है। जितनी पुरानी ज्ञान गंगा की विरासत है, जैसे जितनी गंगा धारा की विरासत आपके पास है। हिंदुस्तान में जब भी चर्चा आती है तो नालंदा, विक्रमशिला को कौन भूल सकता है। मानव जीवन के संशोधन के क्षेत्र के शायद ही कोई ऐसे क्षेत्र रहे होंगे जिसमें सदियों से इस धरती का योगदान न रहा हो, इस धरती का नेतृत्व न रहा हो। जिसके पास इतनी अहम विरासत हो, वो विरासत अपने आप में एक बहुत बड़ी प्रेरणा होती है और जो अपने समृद्ध इतिहास का स्मरण रखता है उसी की कोख में भावी इतिहास गर्भाधान करता है। जो इतिहास को भूल जाता है उसकी कोख बांझ रह जाती है। और इसलिए भावी इतिहास या निर्माण का गर्भाधान भी समृद्ध शक्तिशाली, भव्य, दिव्य भारत का सपना भी, उसका गर्भाधान भी इसी धरती पर संभव है और इस धरती पर से पुलकित होने का सामर्थ्य है। क्योंकि इसके पास महान ऐतिहासिक विरासत है, सांस्कृतिक विरासत है, जीते-जागते उदाहरण है। मैं समझता हूँ कि इतना बड़ा सामर्थ्य शायद ही किसी के पास होता है।

एक समय था, जब हम स्कूल-कॉलेज में सीखने के लिए जाते थे, लेकिन वो युग समाप्त हो चुका है। आज विश्व जिस तेजी से बदल रहा है, मानव की सोच जिस प्रकार से बदल रही है, सोचने का दायरा जिस प्रकार से बदल रहा है, Technology Intervention, जीवन की सोच को, जीवन के व्यवहार को Way of Life को आमूल-चूल परिवर्तन कर रहा है

तब हमारी Universities भी, Universities में आने वाले हर विद्यार्थी के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती यह है, चुनौती यह नहीं कि नया क्या सिखाएं, चुनौती यह है कि पुराना जो सीखकर के आया है उसे कैसे भुलाएं। Unlearn करना, de-learn करना और बाद में Re-learn करना यह आज के युग की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है।

Forbs Magazine के Mr. Forbs ने एक बार कहा था, शिक्षा की एक बड़ी मजेदार परिभाषा उन्होंने दी थी, उन्होंने कहा कि शिक्षा का काम है दिमाग को खाली करना। हमारी सोच क्या रही दिमाग को भरना, रटते रहना, नयी-नयी चीज़ें करते रहना, भरते रहना। Forbs का कहना है शिक्षा का उद्देश्य है दिमाग को खाली करना और आगे कहा दिमाग को खुला करना। अगर सच्चे अर्थ में युगानुकूल परिवर्तन लाना है तो हम सबको भी हमारी Universities में दिमाग खाली करने का अभियान चलाना होगा, दिमाग खोलने का अभियान चलाना होगा, जब खुलेगा तो चारों तरफ से नए विचारों के प्रवेश की संभावना बनेगी, जब खाली होगा तो नए भरने के लिए जगह बनेगी। और इसलिए आज ये Universities उसे Learning दें, Teaching नहीं, Learning को बल देते हुए आगे चलना है और समय की मांग यह है कि हम हमारे शिक्षा संस्थानों को उस दिशा में कैसे लेकर जाएं?

मानव संस्कृति के विकास यात्रा को देखा जाए तो एक बात जिसमें Consistency है, स्थायित्व है और वो है Innovation, नवाचार। हर युग में मानव जात कोई न कोई Innovation करते हुए अपनी Life Style में उसे जोड़ते चले गए। आज Innovation एक बहुत बड़े Competition के कालखंड से गुजर रहा है। दुनिया में वही देश प्रगति कर सकते हैं जो देश Innovation को प्राथमिकता देते हैं। संस्थानों को प्राथमिकता देते हैं, लेकिन संस्थान को इतना Modification नहीं है वो सिर्फ Cosmetic Change को संशोधन नहीं माना जाता है। विज्ञान के, जीवन के मूलभूत सिद्धांतों के उपर कालवाह्य चीज़ों से मुक्ति पाने का रास्ता ढूंढना और भविष्य को ध्यान में रखते हुए यह रास्ते इंगित करना, नए संसाधन इंगित लाना और जीवन को नई उचाईयों पर ले जाना यह समय की मांग हैं। और जब तक हम, हमारे सारे क्षेत्र और जरूरी एक भी ज्ञान और Technology ही संशोधन का क्षेत्र है, समाज शास्त्र भी Innovative way में समाज को दिशा दे सकता है। और इसलिए हमारी Universities का महात्म्य है आने वाले युग की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए और विश्व जिस प्रकार से Globalize हुआ है तो Competition भी Globalize हुए हैं, स्पर्धा भी वैश्विक हुई है और आज हम सिर्फ अपने ही देश में स्पर्धा करने से चलता नहीं है, अड़ोस-पड़ोस से स्पर्धा कर इतना चलता नहीं है, एक वैश्विक परिस्थिति में और भविष्य की परिस्थिति के संदर्भ में भी मैं उस स्पर्धा को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना है। देश को अगर आगे बढ़ाना है, नई उचाईयों पर ले जाना है, बदलते हुए विश्व में हमें अपनी जगह ताकत के साथ खड़ी करनी है तो हमारी युवा पीढ़ी के द्वारा Innovation को जितना बल दिया जाएगा हम दुनिया के अंदर एक ताकत के साथ खड़े रहेंगे।

जब IT Revolution आया किस प्रकार से विश्व का भारत के प्रति सोचने का बदलाव शुरू हुआ, वर्ना दुनिया हमें हमेशा सांप-सपेरों वाला देश मानती थी। दुनिया की यही सोच थी कि भारतीयों ने काला जादू, भारतीयों ने भूत-प्रेत, भारतीयों ने अंध-श्रद्धा, भारतीयों ने सांप और सपेरों की दुनिया, लेकिन जब IT Revolution में जब हमारे देश के 18-20 साल के बच्चे उंगलियों पर दुनिया को एक नई दुनिया दिखाना शुरू कर दिया तो विश्व चौकन्ना हो गया कि यह क्या चीज़ बच्चे बता रहे हैं। भारत की तरफ देखने का नज़रिया बदल गया।

मुझे बराबर याद है जब मैं कई वर्षों पहले एक बार ताईवान गया था। तब तो मैं मुख्यमंत्री भी नहीं था, कहीं चुनाव की दुनिया से मेरा नाता नहीं था, वहां की सरकार के निमंत्रण पर गया था। तो मेरे साथ एक Interpreter था। दस दिन का मेरा वहां tour था। वो Interpreter मुझे बातचीत के माध्यम के रूप में मेरे साथ रहता था। अब दस दिन साथ रहे तो थोड़ा परिचय हो गया, थोड़ी दोस्ती हो गई। तो 6-8 दिन के बाद उसने मुझे एक दिन पूछा, बोले साहब आपको बुरा न लगे तो मुझे कुछ जानकारी चाहिए। मैंने कहा जरूर पूछिए। वो बोले आपको बुरा तो नहीं लगेगा ना? मैंने कहा नहीं-नहीं लगेगा, बताईए न क्या बात है? ठीक है साहब फिर बाद में बात करता हूं। संकोचवश वो बोल नहीं पाया। फिर दोबारा जब हम Traveling में हम साथ थे, तो मैंने फिर से निकाला, मैंने कहा कि भई वो तुम पूछ रहे थे, क्या था? बोले, साहब मुझे बड़ा संकोच होता है। मैंने कहा चिंता मत करो तेरे मन में जो है, पूछो मुझे। वो Computer Engineer था। तो उसने पूछा साहब कि ये हिंदुस्तान अभी भी वैसा ही है, सांप-सपेरों वाला, जादू-टोने वाला। वो मेरी तरफ देखता रहा। फिर मैंने उसको बोला कि मुझे देखकर क्या लगता है? तो थोड़ा वो संकोच में पड़ गया, थोड़ा शर्मिन्दगी महसूस करने लगा। बोला Sorry - Sorry Sir मैंने कुछ गलत पूछ लिया। मैंने कहा कि ऐसा नहीं है भई, तुमने ठीक पूछा है। मैंने कहा कि तुम्हारे मन में ये जो तुम्हारी जानकारी है लेकिन अब हमारा थोड़ा पहले जैसा नहीं रहा है, थोड़ा De-valuation हुआ है। बोले वो कैसे? मैंने कहा कि पहले हमारे जो पूर्वज थे वो सांप से खेला करते थे, हमारी जो नई पीढ़ी है वो Mouse से खेला करती है। वो समझ गया कि मैं किस Mouse की बात कर रहा हूं। वो गणेश जी वाला चूहा नहीं, वो computer वाला चूहा था।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यह चीज़ें हैं जो देश की ताकत बढ़ाती हैं, लेकिन कभी-कभार हम सिद्धांतों के आधार पर एक-आध Project लेकर के एक-आध Innovative चीज़ बनाकर के शायद Prize भी जीत लेते हैं, लेकिन आज हिंदुस्तान

के सामने सबसे बड़ी आवश्यकता यह है और मैं 100 साल पुरानी पटना यूनिवर्सिटी जिसने देश को बहुत कुछ दिया है, उस पवित्र धरती से देश भर के नौजवानों को आज आह्वान करता हूँ, विद्यार्थियों को आह्वान करता हूँ, Faculties को आह्वान करता हूँ, Universities को आह्वान करता हूँ कि हम हमारे आस-पास जो समस्या देखते हैं, सामान्य मानविकी जो कठिनाईयाँ देखते हैं, उसके समाधान के लिए कोई Innovative way ढूँढ सकते हैं क्या? उसके लिए कोई नई टेक्नॉलाजी ढूँढ सकते हैं क्या? उसके लिए Technology सस्ती हो, सरल हो, Affordable हो, User Friendly हो। अगर एक बार ऐसे छोटे-छोटे Projects के Innovation को हम बल देंगे वो आगे चलकर के Start-up में Convert होगा, हिंदुस्तान के नौजवान Start-up के माध्यम से Universities की शिक्षा-दीक्षा का Innovation, भारत सरकार की बैंकों की 'मृदा योजना' से बैंकिंग मदद और Start-up की दिशा में कदम आप कल्पना नहीं कर सकते, आज हिंदुस्तान Start-up की दुनिया में चौथे नंबर पर खड़ा है और देखते ही देखते हिंदुस्तान Start-up की दुनिया में अग्रिम पंक्ति में आ सकता है। और अगर वो आर्थिक विकास की एक नई दुनिया हिंदुस्तान के हर कोने में हर युवा के हाथ में Start-up को लेकर कुछ करने का इरादा हो तो कितना बड़ा परिवर्तन और परिणाम मिल सकता है इसका मैं भलि-भाँति अंदाजा कर सकता हूँ। इसलिए देश की Universities को मैं निमंत्रण देता हूँ, मैं पटना यूनिवर्सिटी को विशेष रूप से निमंत्रण देता हूँ कि आईए Innovation को बढ़ावा दें। हम दुनिया से आगे निकलने के लिए अपनी एक महारथ हासिल करें।

और भारत के पास Talent की कमी नहीं है और भारत भाग्यवान है कि आज हमारे पास 800 मिलियन देश की 65 प्रतिशत जनसंख्या, 35 वर्ष से कम उम्र की है। मेरा हिंदुस्तान जवान है, मेरे हिंदुस्तान के सपने भी जवान है। जिस देश के पास यह ताकत हो वो दुनिया को क्या नहीं दे सकता है। वो देश अपने सपनों को क्यों पूरा नहीं कर सकता है, मेरा विश्वास है कि अवश्य कर सकता है।

और इसलिए अभी नीतिश जी ने बड़े विस्तार से एक विषय को बड़े आग्रह से रखा और आपने भी उसको ताकत दी तालियाँ बजा-बजकाकर के। लेकिन मैं मानता हूँ कि केन्द्रीय यूनिवर्सिटी, ये बीते हुए कल की बात है। मैं उसे एक कदम आगे ले जाना चाहता हूँ और मैं आज यही निमंत्रण देने के लिए आज इस यूनिवर्सिटी कार्यक्रम में विशेष रूप से आया हूँ। हमारे देश में शिक्षा क्षेत्र के Reform बहुत मंद गति से चले हैं। हमारे शिक्षाविदों में भी आपसी मतभेद बड़े तीव्र रहे हैं और Reform के हर कदम Reform से ज्यादा समस्याओं को उजागर करने के कारण बने हैं और उसी का परिणाम रहा है कि लंबे अरसे तक हमारी शिक्षा व्यवस्था में और खासकर उच्च शिक्षा में बदलते हुए विश्व की बराबरी करने के लिए जो Innovation चाहिए Reform चाहिए सरकारें उसमें कुछ कम पड़ गई हैं। इस सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं, कुछ हिम्मत दिखाई है। अभी आप में से जिनको अध्ययन का स्वभाव होगा आपने देखा होगा, हमारे देश में कई सालों से चर्चा चल रही थी IIM सरकारी कब्जे में रहे या न रहे? स्वतंत्र रहे न रहे, आधा-अधूरा स्वतंत्र है सरकार रहे? सरकार में लगता था कि हम इतना पैसा देते हैं और हमारी कोई बात ही नहीं चलती तो कैसे चलेगा? मैं डेढ़-दो साल तक सुनता रहा, सुनता रहा, सुनता रहा और आपको जानकर के खुशी होगी और देश के Academic World को भी जानकर खुशी होगी ऐसे विषयों की ज्यादातर अखबारों में चर्चा नहीं आती है, ये विषय ऐसे होते हैं कि वो खबरों में जल्दी जगह पाते नहीं हैं, लेकिन कुछ लोगों ने आर्टिकल जरूर लिखे हैं। पहली बार देश ने IIM को पूरी तरह सरकारी कब्जे से बाहर निकालकर के उसे Professionally Open-Up कर दिया। यह बहुत बड़ा फैसला किया है। जैसे पटना यूनिवर्सिटी के लिए IAS, IPS, IFS ये बाएं हाथ का खेल है वैसे ही IIM के लिए, देश भर की IIM Institute के लिए विश्व को CEO सप्लाई करना, वो बाएं हाथ का खेल रहा है। इसलिए विश्व की इतनी बड़ी Prestigious Institute सरकारी नियमों, बंधनों, बाबूओं के उसमें आना-जाना Meeting को खींचना ये सारी चीजों से हमने मुक्त कर दिया है। मुझे विश्वास है कि हमने IIM को इतना बड़ा अवसर दिया है कि IIM के लोग इस अवसर को एक अद्भुत मौका मानकर के देश की आशा आकांक्षाओं के अनुकूल अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय करके देश को कुछ दिखा देंगे। मैंने उनसे एक आग्रह किया है IIM के Reform के अंदर एक बात को जोड़ा गया है कि अब IIM को चलाने में IIM के जो Alumina हैं उनकी सक्रिय भागीदारी चाहिए। पटना यूनिवर्सिटी जैसी पुरानी यूनिवर्सिटी में मेरा भी आग्रह है कि आपका Alumina बहुत समृद्ध है, सामर्थ्यवान है उस Alumina को किसी भी हालत में यूनिवर्सिटी के साथ जोड़ना चाहिए, यूनिवर्सिटी की विकास यात्रा को उसको भागीदार बनाना चाहिए। आप देखते हैं कि दुनिया में जितनी भी top Universities हैं उसको आगे बढ़ाने में Alumina का बहुत बड़ा योगदान होता है और सिर्फ Money से नहीं Intellectual, Experience, Status, पद, प्रतिष्ठा यह सारी चीजें उसके साथ जुड़ जाती हैं। हमारे देश में यह परंपरा बहुत कम मात्रा में है, तो भी जरा उदासीन है। किसी एकआध Function में बुला लिया, माला-वाला पहना दी, या तो दान मिला, उससे जुड़ा रहता है। हमें Alumina अपने आप में एक बहुत बड़ी ताकत होती है उसके जीवन संपर्क की व्यवस्थाओं को विकसित करना होगा।

जो मैं बात कर रहा था कि हम Central University से एक कदम आगे जाना चाहते हैं और मैं पटना यूनिवर्सिटी को उस एक कदम आगे ले जाने के लिए निमंत्रण देने आया हूँ। भारत सरकार ने एक सपना देश की Universities के सामने प्रस्तुत किया है। विश्व के 500 top Universities में हिंदुस्तान का कहीं नामो-निशान नहीं है। जिस धरती पर नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला, बल्लभी ऐसी Universities कोई 1300 साल पहले, कोई 1500 साल पहले, कोई 1700 साल पहले

पूरे विश्व को आकर्षित करती थी क्या वो हिंदुस्तान दुनिया की पहली 500 Universities में कहीं न हो? यह कलंक मिटाना चाहिए कि नहीं मिटाना चाहिए, यह स्थिति बदलनी चाहिए कि नहीं बदलनी चाहिए। क्या कोई बाहर वाला आकर बदलेगा? हमें ही तो बदलना होगा, सपने भी तो हमारे होने चाहिए, संकल्प भी तो हमारे होने चाहिए और सिद्धि के लिए पुरुषार्थ भी तो हमारा होना चाहिए।

इसी मिजाज़ से एक योजना भारत सरकार लाई है और वो योजना यह है कि देश कि 10 Private University और देश की 10 Public Universities, Total 20 Universities इनको World Class बनाने के लिए एक आज जो सरकार के सारे बंधन हैं, सरकार के जो कानून नियम हैं, उससे उनको मुक्ति देना। दूसरा आने वाले 5 साल में इन Universities को 10 हजार करोड़ रूपया देना। लेकिन यह Universities का Selection किसी नेता की इच्छा पर नहीं होगा, प्रधानमंत्री की इच्छा पर नहीं होगा, किसी मुख्यमंत्री की चिट्ठी और सिफारिश से नहीं होगा। पूरे देश की Universities को Challenge रूप में निमंत्रित किया गया है, उस Challenge रूप में हर किसी को आना होगा, अपने सामर्थ्य को सिद्ध करना होगा और Challenge रूप में जो Top 10 Private आएगी, Top 10 Public आएगी, उसका एक Third Party Professional agency द्वारा Challenge group में Selection होगा। उस Challenge group में राज्य सरकारों कि भी जिम्मेदारी होगी, जिस नगर में यह Universities होगी उनकी जिम्मेवारी होगी, जो लोग Universities चलाते होंगे उनकी जिम्मेवारी होगी। उनके इतिहास को देखा जाएगा उनके Performance को देखा जाएगा। वैश्विक स्तर पर आवश्यक बदलाव का उनका रोडमैप देखा जाएगा और ये जो Universities Top 10-10 आएंगी, 20 total उनको सरकार के नियमों, बंधनों से मुक्त करके एक स्वतंत्रता दी जाएगी। उनको जिस दिशा में जैसे आगे बढ़ना है आगे बढ़ने के लिए अवसर दिया जाएगा। इस काम के लिए 5 साल के भीतर-भीतर इन Universities को 10 हजार करोड़ रूपया दिया जाएगा। ये Central Universities से कई गुना आगे हैं। बहुत बड़ा फैसला है और पटना इसमें पीछे नहीं रहनी चाहिए ये निमंत्रण देने के लिए मैं आपके पास आया हूँ। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि पटना युनिवर्सिटी आगे आए, उसकी Faculties आगे आए और इस महत्वपूर्ण योजना और पटना युनिवर्सिटी हिंदुस्तान के आन-बान और शान जो पटना की ताकत है वो विश्व के अंदर भी पटना युनिवर्सिटी की ताकत बने उसको आगे लेकर चलने की दिशा में आप मेरे साथ चलिए, इसी एक सद्भावना के साथ मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

इस शताब्दी समारोह में आपने जितने संकल्प किए हैं उन सभी संकल्पों को आप परिपूर्ण करें, इसी एक भावना के साथ मेरी तरफ से आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

AKT/AK/AK